फरवरी 2022 वर्ष 2, अंक 2

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड – टु – बी – यूनिवर्सिटी) दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम

डी.ई.आई.–डी.ई.पी. समाचार

विज्ञान न केवल अध्यात्म के अनुकूल है; यह आध्यात्मिकता का एक गहरा स्रोत है। जब हम प्रकाश–वर्षों (light years) की विशालता में और युगों के बीतने में अपने स्थान को पहचान लेते हैं, जब हम जीवन की पेचीदगियों, सुंदरता और सूक्ष्मता को समझ लेते हैं, तो वह उड़ती हुई भावना, वह आनंद और दीनता की भावना, निश्चित रूप से आध्यात्मिक होती है।

& dkyZ lxu

विषय सूचि

dkvkfMZusVj dh MsLd ls -- 2

Hkkjr esa mPp f'k{kk dk ifjn`';-- 3

Mh-bZ-vkbZ- ls lekpkj -- 5

lwpuk dsUnz ls lekpkj -- 6

Mh-bZ-vkbZ-&Mh-bZ-ih- lekpkj lfefr -- 10

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड – टु – बी – यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा– 282005

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से

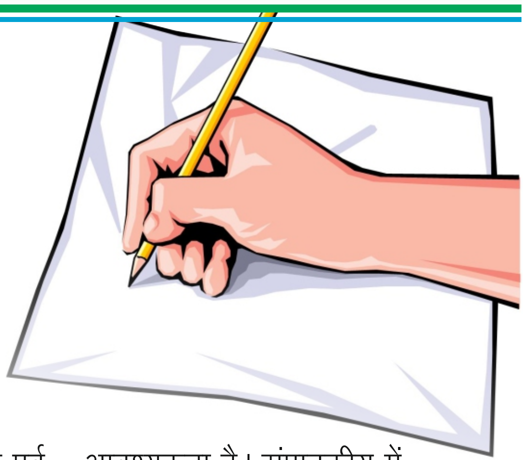

हाल ही में मेरे अख़बार के एक अंदरूनी पृष्ठ पर निम्नलिखित शीर्षक ने मेरा ध्यान आकर्षित किया: 'शीर्ष' भारतीय विश्वविद्यालय, IITs ब्रिटिश छात्रों के लिए वहाँ अपनी शाखा (outpost) खोलने के लिए U.K. के साथ बातचीत कर रहे हैं (टाइम्स ऑफ़ इंडिया, 16 फरवरी, 2022)। प्रस्ताव में यह भी परिकल्पना की गई थी कि ब्रिटिश संस्थान भारत में अपनी शाखाएँ भी स्थापित करेंगे। अगले दिन अखबार ने इसका आलोचनात्मक मूल्यांकन अपने पहले संपादकीय में एक असाधारण शीर्षक, 'आई फॉर इंटरनेशनल?–आई. आई. टी. का विस्तार विदेश में एक अच्छा विचार है' के तहत किया। लेकिन यह भी कहा कि इसके पहले घरेलू स्तर पर घर को व्यवस्थित करना एक पूर्व – आवश्यकता है। संपादकीय में एक महत्वपूर्ण बिंदु यह था कि घर पर आई. आई. टी. की सफलता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा इस तथ्य पर निर्भर है कि महीनों तक कुछ छात्र एक क्रूर प्रतिस्पर्धा वाली प्रवेश परीक्षा की तैय्यारी करते हैं। इन छात्रों के जगमगाने की संभावना उनकी अपनी योग्यता पर निर्भर होती है। उनकी सफलता का कितना श्रेय पुराने संस्थानों सहित IIT में शिक्षाशास्त्र और अनुसंधान की गुणवत्ता के कारण है, यह महत्वपूर्ण प्रश्न है।

संपादकीय में यह भी बताया गया था कि आठ नए IIT जिनकी स्थापना 2008–09 में की गई थी, आगे चलकर CAG ऑडिट ने उन्हें दयनीय स्थिति में पाया। राज्यों ने जमीन का ठीक से इंतजाम नहीं किया, लैब अपर्याप्त हैं, बहुत कम शोध गैर–सरकारी स्रोतों द्वारा प्रायोजित हैं, और अधिकांश के बारे में बता रहे हैं कि कुल मिलाकर, पांच साल की अवधि में इन IITs ने शून्य पेटेंट प्राप्त किये। ऑडिट गंभीरता से खराब प्रबंधन के लिए गवर्निंग बोर्ड को इंगित करती है। संपादकीय का समापन 'माइनस' कथन के साथ होता है: आमूल–चूल सुधारों (Radical reforms) के अभाव में उच्च शिक्षा का अधिकांश हिस्सा, जैसा कि अभी है, अर्थहीन रहेगा।

संपादकीय में व्यक्त विचार भारतीय विश्वविद्यालयों के संघ की महासचिव डॉ. पंकज मित्तल के हाल के प्रकाशन [1] में प्रस्तुत किए गए विचारों के अनुरूप हैं, जिसका एक अंश नीचे प्रस्तुत किया जाता है:

'भारत को अंतरराष्ट्रीय छात्रों को आकर्षित करने के लिए विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचे के निर्माण, वीज़ा नियमों को सरल बनाने, आसान प्रवेश और निकास प्रावधान, अंतरराष्ट्रीय छात्रावास, और अंतरराष्ट्रीय अभिविन्यास के साथ पाठ्यचर्या संशोधन सहित कई कदम उठाने की जरूरत है। विदेशी छात्रों को आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले महत्वपूर्ण कारकों में निम्नलिखित शामिल हैं: शिक्षण पर ध्यान देने के साथ कक्षा के अनुभव को समृद्ध करना; एक मजबूत मूल्यांकन प्रक्रिया; अभिनव पाठ्यक्रम; वैश्विक स्तर पर पहुंच; शिक्षण–अधिगम में लचीलापन; प्रवेश परीक्षाओं का अंतर्राष्ट्रीयकरण; अंतरराष्ट्रीय छात्रों के लिए वर्क परमिट जारी करना; अंतरराष्ट्रीय पाठ्यक्रम; अच्छी गुणवत्ता वाले संकाय; अनुसंधान सुविधाएं; अंतरराष्ट्रीय पैटर्न पर ग्रेड और क्रेडिट की स्वीकार्यता; और आरामदायक और किफायती छात्रावास'।

उपरोक्त के अलावा, क्रेडिट ट्रांसफर की एक समान प्रक्रिया विकसित करना, अंतर्राष्ट्रीयकरण को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालयों की सहायता के लिए एक सलाहकार निकाय की स्थापना करना और कई अन्य पूर्व आवश्यकताएं डॉ. मित्तल द्वारा सुझाई गई हैं।

डॉ. मित्तल के लेख में उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के अनुसार, वर्तमान में लगभग 800,000 भारतीय छात्र विदेशी उच्च शिक्षा संस्थानों में अध्ययन के लिए विदेश जाते हैं, जबकि भारत में केवल 46,000 विदेशी छात्र आते हैं, जिसमें से आधे से अधिक नेपाल और अफगानिस्तान के होते हैं। उनके अनुसार भारत को अंतरराष्ट्रीय छात्रों को आकर्षित करने के लिए अपने व्यापक शैक्षिक नेटवर्क की पूरी क्षमता का उपयोग करना अभी बाकी है।

(प्रो. वी. बी. गुप्ता)

[1] Pankaj Mittal, 'Creating Future Ready Universities: The Indian context', chapter 1 in the book entitled 'Reimagining Indian Universities' edited by Pankaj Mittal and Sistla Rama Devi Pani, published by A.I.U., New Delhi in August 2020.

भारत में उच्च शिक्षा का परिदृश्य

1. परिचय

डी.ई.आई.–डी.ई.पी. समाचार के जनवरी 2022 के अंक में, हमने दुनिया भर में उच्च शिक्षा के संस्थानो (Higher Education Institutions, HEIs) में शिक्षा 4.0 (Education 4.0) के आगमन के बारे में लिखा था। न्यूज़लेटर के इस संस्करण में, हम भारत के विशिष्ट संदर्भ में स्थिति पर विचार करेंगे। प्रो. रणबीर सिंह, कुलपति, नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली [1]के प्रनुसार भारत में 50,000 से अधिक उच्च शिक्षण संस्थानों (एच ई आई) के साथ दुनिया की सबसे बड़ी उच्च शिक्षा प्रणाली है, जो मुख्य रूप से 2001 के बाद से शिक्षा क्षेत्र में चार गुना वृद्धि के कारण शुरू हुई है। हालांकि, कम वित्त पोषण, स्नातकों में रोजगार क्षमता की कमी, शिक्षण के खराब मानकों, कमजोर शासन और जटिल नियामक प्रक्रियाओं जैसी विभिन्न चुनौतियां भारत में शिक्षा क्षेत्र को प्रभावित कर रही हैं।

यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षा 4.0 में परिवर्तित होने से पहले इन कमियों को उचित सीमा तक दूर किया जाए।

2. उच्च शिक्षा का वित्त पोषण (Financing)

साठ के दशक (1964–66) में भारत सरकार द्वारा स्थापित कोठारी आयोग ने सुझाव दिया था कि राष्ट्रीय आय (सकल घरेलू उत्पाद या जी डी पी) का 6 प्रतिशत शिक्षा पर खर्च किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 और कार्य योजना 1992 में भी परिकल्पना की गई थी कि सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 6% शिक्षा क्षेत्र के लिए निर्धारित किया जाएगा। खर्च की गई वास्तविक राशि इस राशि के आधे से कुछ अधिक रही है। प्रो. एल.के. अवस्थी, निदेशक, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जालंधर [2] के अनुसार, भारत में 15–24 वर्ष की आयु के बीच की सबसे बड़ी युवा आबादी है, हालांकि, प्रति छात्र और प्रति शिक्षक पर खर्च के मामले में यह बहुत कम है।

भारत में उच्च शिक्षा के लिए सकल घरेलू उत्पाद का प्रतिशत हिस्सा 0.5% के करीब है, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका में 2.9% और चीन में 1.5% है। उच्च शिक्षा के वित्तपोषण की जिम्मेदारी सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों द्वारा साझा की जाती है। सार्वजनिक क्षेत्र में, यह राज्य सरकार के संस्थानों के लिए केंद्र और राज्य सरकारों की संयुक्त जिम्मेदारी है। लगभग 80 प्रतिशत वित्त पोषण राज्य सरकार द्वारा किया जाता है। यहां तक कि राज्य सरकार में भी लगभग 82 प्रतिशत फंडिंग नियमित खर्चः प्रशासन और रखरखाव आदि के लिए है, और इसलिए शायद ही कोई फंड क्षमता निर्माण के लिए खर्च किया जाता है। केंद्र सरकार का खर्च केंद्रीय विश्वविद्यालयों और उत्कृष्टता केंद्रों (Centres of Excellence) की ओर एकतरफा है, जो देश में कुल उच्च शिक्षा के छात्रों का मुश्किल से 3 प्रतिशत है।

उच्च शिक्षा के सार्वजनिक वित्त पोषण में कमी के साथ, स्थिर राजस्व और संस्थानों में बढ़ती लागत के बीच मेल नहीं है। इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि भारत में निजी उच्च शिक्षा प्रदाताओं में तेजी आई है। लगभग एक तिहाई भारतीय विश्वविद्यालय, 60% कॉलेज और 75% डिप्लोमा संस्थान निजी हैं। नामांकन के लिहाज से 67 फीसदी छात्र निजी संस्थानों में हैं। इन संस्थानों द्वारा ली जाने वाली फीस अत्यधिक होती है और अक्सर उनमें गुणवत्ता भी कम होती हैं।

3. स्नातकों में रोजगार योग्यता की कमी

स्नातकों में रोजगार योग्यता की कमी चिंता का विषय है। जैसा कि 'एस्पायरिंग माइंड्स' द्वारा तैय्यार इंजीनियरों के लिए

2019 की वार्षिक राष्ट्रीय रोजगार रिपोर्ट में बताया गया है, 'स्नातक करने वाले (graduating) 80 % इंजीनियर किसी भी नौकरी के लिए रोजगार योग्य नहीं हैं...... यह निष्कर्ष निकालना सुरक्षित है कि भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली को छोटे तदर्थ (ad-hoc) परिवर्तनों से मदद नहीं मिली है, जिसका वह आदी है और उसे मौलिक परिवर्तन की आवश्यकता है। सूक्ष्म हस्तक्षेप (Micro-interventions) क्षमता के अलग – अलग पॉकेट बनाने में मदद कर सकते हैं, लेकिन वे उच्च शिक्षा या समग्र रूप से बड़ी अर्थव्यवस्था के लिए बहुत कम करते हैं। भारत सरकार को उच्च शिक्षा को प्राथमिकता देने और अगले 5–10 वर्षों में इंजीनियरिंग रोजगार की निम्न दर को सुधारने के लिए दीर्घकालिक नीतिगत हस्तक्षेप (long – term policy interventions) करने की आवश्यकता है।

वैश्विक प्रोग्रामिंग कौशल तुलना में, सर्वेक्षण में पाया गया है कि चीन के 10.4% और यू. एस.ए. के 4% की तुलना में 37.7% भारतीय इंजीनियर,अनुपालन योग्य (compatible) कोड नहीं लिख सकते हैं।रिपोर्ट के लेखकों ने यह कहते हुए निष्कर्ष निकाला कि वैश्विक प्रतिभा युद्ध में, भारत को आई टी कौशल में अपने खेल को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाने की जरूरत है।

4. उच्च शिक्षा की बहुआयामी आवश्यकताएं

प्रो. एम.ए. वर्गीस,पूर्व कुलपति, एस. एन. डी. टी विश्वविद्यालय, मुंबई [3] के अनुसार, पिछले सात दशकों में उच्च शिक्षा का तेजी से विस्तार हुआ है, लेकिन गुणवत्ता अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तुलनीय नहीं है। उच्च गुणवत्ता के लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए, वित्तीय संसाधनों, पहुंच (access) और इक्विटी (equity), गुणवत्ता मानकों, पाठ्यक्रम, प्रासंगिकता, बुनियादी ढांचे, शासन, संगठन के ढांचे आदि की समीक्षा करने की आवश्यकता है।

उच्च शिक्षा समुदाय द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का व्यापक रूप से स्वागत किया गया है। यह आशा की जाती है कि इसके सख्त कार्यान्वयन से भारत में उच्च शिक्षा की अधिकांश समस्याओं का समाधान होगा और इसे सही रास्ते पर लाया जाएगा।

प्रो. वी. बी. गुप्ता (द्वारा संकलित),
समन्वयक, डीईआई दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम

संदर्भ :

Reimagining Indian Universities, Edited by Pankaj Mittal and Sistla Rama Devi Pani, Association of Indian Universities, New Delhi, August 2020.

[1] Ranbir Singh: Chapter 4 – Towards Making Indian Universities Relevant and Future – Ready.

[2] Lalit Kumar Awasthi: Chapter 7 – Building Agile and Evolving Higher Education Institutions.

[3] M.A. Varghese: Chapter 8 – Envisioning the Future of Indian Higher Education.

डी.ई.आई. से समाचार

Mh-bl-vkbl- dk 40ok nh{kkr lekjkg vk;kftr

डी.ई.आई. का 40वां दीक्षांत समारोह 12 फरवरी, 2022 को आयोजित किया गया था। परम पूज्य प्रोफेसर पी.एस. सत्संगी साहब, अध्यक्ष, शिक्षा सलाहकार समिति, दयालबाग शैक्षणिक संस्थान (गैर–सांविधिक संस्थान (Non-statutory Body), डी.ई. आई. के लिए एक थिंक – टैंक के रूप में कार्यरत) और आदरणीय रानी साहिबा ने वर्चुअल – पुण्य (Virtual – virtuous) मोड में इस मील के पत्थर (milestone) घटना की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ० अजय कुमार, आई.ए.एस., सचिव, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार थे। पूरी प्रक्रिया के दौरान चल रही महामारी के कारण अनुशंसित प्रोटोकॉल के अनुसार सभी सावधानियों का विधिवत पालन किया गया।

इस वर्ष, अध्ययन के विभिन्न कार्यक्रमों के कुल 5742 छात्रों ने संस्थान से डिग्री/डिप्लोमा प्राप्त किये। 88 छात्रों को पी एच.डी. डिग्री, 3136 छात्रों को स्नातक की डिग्री, 708 छात्रों ने मास्टर डिग्री, 65 ने एम.फिल डिग्री प्राप्त की। 821 ने डिप्लोमा प्राप्त किया, 175 ने स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त किया, 327 ने हाई स्कूल प्रमाण–पत्र प्राप्त किया और 422 ने इंटरमीडिएट डिग्री प्राप्त की। 153 छात्रों ने अपने संबंधित अध्ययन कार्यक्रम में उच्चतम ग्रेड अंक प्राप्त करने के लिए निदेशक पदक प्राप्त किये। इस वर्ष तीन छात्रों को उनकी उत्कृष्ट शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए अध्यक्ष (डी.ई.आई.) पदक मिला। सभी स्नातक परीक्षाओं, 2021 में उच्चतम ग्रेड अंक हासिल करने के लिए, सुश्री मिताली वार्ष्णेय को इस पदक से सम्मानित किया गया, जबकि सभी स्नातकोत्तर परीक्षाओं, 2021 में उच्चतम ग्रेड अंक हासिल करने के लिए, सुश्री आरती गुप्ता और सुश्री तान्या सिंह ने यह प्रतिष्ठित पदक प्राप्त किया। अंत में, अध्यक्ष, डी.ई.आई. ने मुख्य अतिथि डॉ० अजय कुमार को सिस्टम्स सोसाइटी ऑफ इंडिया की ओर से लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड प्रदान किया।

lwpuk dsUnzksa ls lekpkj

vkbZ lh Vh dsUnz] csaxyksj }kjk vk;ksftr vkfM;ks osfcukj

डी.ई.आई. आई सी टी सेंटर, बैंगलोर ने 19 दिसंबर, 2021 को ''आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड मशीन लर्निंग'' पर एक ऑडियो वेबिनार का आयोजन किया। वक्ता इन्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ सांइस, बैंगलोर की डॉ० स्वांति सत्संगी थीं। कार्यक्रम की शुरुआत प्रो. टी वी एस एन मूर्ति, केंद्र प्रभारी, के उद्घाटन भाषण से हुई, इसके बाद श्रीमती प्रीति शर्मा और श्रीमती शिखा माथुर द्वारा संस्कृत में विश्वविद्यालय प्रार्थना की गई। प्रस्तुति के बाद, वक्ता और दर्शकों के बीच एक दिलचस्प बातचीत हुई। श्री सौरभ श्रीवास्तव, श्रीमती श्रुति सत्संगी और श्रीमती सुरत रोशनी मिश्रा ने आयोजन की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

djksy ckx dsUæ esa ßekuo cqd Dyc xfrfof/k dk vk;kstu

करोल बाग केंद्र ने 7 फरवरी, 2022 को संकाय और छात्रों के साथ मानव पुस्तक क्लब नामक एक सीसीए गतिविधि का आयोजन किया। सभी ने बड़े उत्साह और जोश के साथ भाग लिया। पूरी गतिविधि को छात्रों और संकाय सांस्कृतिक समन्वयक टीम द्वारा सावधानीपूर्वक योजनाबद्ध तरीके से होस्ट किया गया था।

यह कार्यक्रम इस दुनिया में मानवीय अनुभवों के बारे में था। सभी को अपने जीवन की पुस्तक से एक अध्याय प्रस्तुत करने के लिए कहा गया था जिसमें अनुभव और उनसे सीखे गए सबक शामिल थे और इसे एक उपयुक्त शीर्षक देने के लिए कहा गया था। अंत में, सी सी ए समन्वयक द्वारा दर्शकों को संबोधित किया गया, जहां उन्होंने आयोजन टीम और छात्रों द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की और दर्शकों को एक साथ साझा करने और सीखने के महत्व के बारे में भी बताया।

djksyckx lsVj esa euk;k yksgM+h vkSj x.kra= fnol

करोलबाग केंद्र हर साल लोहड़ी मनाता है। इस वर्ष भी, संकाय और छात्रों ने 13 जनवरी, 2022 को इस धार्मिक और सांस्कृतिक उत्सव को मनाया। पूरे कार्यक्रम की योजना बनाई गई और छात्रों और संकाय सांस्कृतिक समन्वयक टीम द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय की प्रार्थना के साथ हुई, जिसके बाद छात्रों ने लोहड़ी के बारे में एक ऊर्जावान, गर्मजोशी और बहुत जानकारीपूर्ण परिचय दिया ''क्यों मनाया जाता है? और इसका महत्व।'' इसके बाद छात्रों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम (कहानी और कविता/गीत पाठ सहित) का आयोजन किया गया। अंत में केंद्र प्रभारी द्वारा दर्शकों को संबोधित किया गया, जहाँ उन्होंने आयोजन दल और छात्रों के प्रयासों की सराहना की और दर्शकों को इस दिन के महत्व के बारे में भी बताया। कार्यक्रम का समापन विश्वविद्यालय गीत की प्रस्तुति के साथ हुआ।

26 जनवरी, 2022 को करोल बाग केंद्र में गणतंत्र दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। पूरे कार्यक्रम को छात्रों और संकाय सांस्कृतिक समन्वयक टीम द्वारा पूरी लगन से नियोजित और होस्ट किया गया था। कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय प्रार्थना के साथ हुई, और फिर ध्वजारोहण हुआ। इसके बाद राष्ट्रगान और डी.ई.आई. एंथम (सुनो भाई एक गान हमारा) की प्रस्तुति हुई। इसके बाद छात्रों द्वारा इस दिन के महत्व के बारे में एक बहुत ही जानकारीपूर्ण परिचय दिया गया। फिर छात्रों द्वारा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया (स्वतंत्रता सेनानियों के नारे, कहानी सुनाना, प्रश्नोत्तरी, कविता/गीत पाठ और खुली मेज पर चर्चा सहित)। अंत में केंद्र प्रभारी द्वारा श्रोताओं को संबोधित किया गया। कार्यक्रम का समापन विश्वविद्यालय गीत गाकर किया गया।

eqjkj lsVj esa x.kra= fnol lekjksg

सूचना केंद्र मुरार ने धूमधाम से गणतंत्र दिवस मनाया। सत्संग कॉलोनी मुरार में रहने वाले सत्संगी भाइयों और बहनों और अन्य लोगों को समारोह में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया था।

कार्यक्रम सुबह 8:15 बजे शुरू हुआ। मुख्यालय से सभी धाराओं के छात्रों और उनके शिक्षकों ने ऑडियो प्रसारण प्राप्त किया। तत्पश्चात सभी विद्यार्थियों ने मार्च पास्ट प्रस्तुत कर संकल्प लिया।

डी डी टी स्ट्रीम की छात्रा कुमारी कुसुम ने 26 जनवरी के महत्व पर भाषण दिया।

इलेक्ट्रीशियन कोर्स के छात्रों ने ''मेरा देश महान''पर एक एक्शन गीत प्रस्तुत किया। खेल और पेंटिंग प्रतियोगिता भी हुई। अंत में सभी को जलपान कराया गया।

LFkkiuk fnol ¼Founder's Day½ lekjksg ,d utj esa

eqcbZ dsaæ 31 जनवरी, 2022 को मुंबई सेंटर में स्थापना दिवस बड़े उत्साह और जोश के साथ मनाया गया और केंद्र की सीढ़ियों, दीवारों, मार्गों और दरवाजों को रंगीन रंगोली और कलाकृतियों के द्वारा सजाया गया जिससे उन्होंने उत्सव का रूप धारण किया। डी.ई.आई. के संस्थापक परम श्रद्धेय डॉ० एम.बी. लाल साहब के 'सिंघासन' को रेशमी कपड़े और जरी के काम, ताजे फूल, तंबू, एक सुनहरा जाल और तरह–तरह की रंगीन एल ई डी लाइटों से शानदार ढंग से सजाया गया था। पूरा वातावरण एक आध्यात्मिक आभा से भर गया था।

कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय प्रार्थना से हुई। इसके बाद पूरी मण्डली द्वारा हुजूर राधास्वामी दयाल के चरणों में प्रेम और भक्ति के साथ पाठ ''आज साहब घर मंगलकारी.....''

का पाठ किया गया और परम पूज्य परम गुरु हुजूर डॉ० एम.बी. लाल साहब को नमन किया गया।

स्वागत भाषण के बाद केंद्र प्रभारी ने सभा को संबोधित करते हुए इसके महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि स्थापना दिवस, डी.ई.आई. की उपलब्धियां और डी.ई.आई. की शिक्षा नीति हमारे वैभवपूर्ण संस्थापक द्वारा तैयार की गई हैं। उन्होंने उनके जीवन के बारे में भी संक्षेप में बात की। इसके बाद कविता पाठ, भक्ति संगीत और संकाय सदस्यों, मैन्टर्स और डी.ई.आई. के छात्रों में से एक ने डी.ई.आई.में प्रदान की जाने वाली मूल्य–आधारित शिक्षा, समाज के सभी वर्गों और दयालबाग को नाममात्र की कीमत पर अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा पर प्रकाश डाला और यह भी बताया कि दयालबाग़ की जीवन शैली अनुकरण करने के लिए एक आदर्श उदाहरण है। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद प्रस्ताव और उसके बाद एक पाठ के साथ हुआ।

VksjaVks 'kk[kk

31 जनवरी, 2022 को, टोरंटो शाखा ने दयालबाग शैक्षिक संस्थान के वैभवपूर्ण संस्थापक परम पूज्य डॉ० एम.बी. लाल साहब की मधुर स्मृति में स्थापना दिवस मनाया। कार्यक्रम की शुरूआत डी.इ.आई. प्रार्थना 'हे दयाल सद् कृपाल' संस्कृत पाठ से हुई। श्रद्धा और हृदय से अर्पित कृतज्ञता के साथ रचना 'मेरे प्यारे लाल साहब, सबके प्यारे लाल साहब' का पाठ आराधना और समर्पण के साथ किया गया। संत सुपरमैन योजना के नन्हे–मुन्नों और सी आर सी के बच्चों ने परम गुरु हुजूर डॉ० लाल साहब के समय में शिक्षा, विशेष रूप से डी.ई.आई. (डीम्ड–टू–बी–यूनिवर्सिटी) की स्थापना के बारे में हुई प्रगति पर प्रकाश डाला। टोरंटो के युवाओं और डी.ई.आई. के पूर्व छात्रों द्वारा उनकी कृपा और दयालु आध्यात्मिक बातचीत के कुछ विशेष अनुभवों पर ऑडियो मोड में प्रस्तुततिकी गयी। सभी उपस्थित लोगों को दयालबाग़ बिल्डिंग्स को पहचानने के लिए गेसिंग गेम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। सभी प्रतिभागियों ने खेल का लुत्फ उठाया।

इसके बाद,एक जश्न मनाने वाली कव्वाली, 'लाली मेरे लाल की जित देखूं तित लाल' का पाठ उत्साह और आध्यात्मिक भाव के साथ किया गया। कार्यक्रम का समापन डी.ई.आई. गीत की प्रस्तुति के साथ हुआ।

eqjkj dsaæ

डी.ई.आई. सूचना केंद्र मुरार में स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत छात्रों द्वारा विश्वविद्यालय प्रार्थना से हुई। परम गुरु हुजूर डॉ० एम.बी. लाल साहब का जीवन इतिहास श्री आगम सत्संगी द्वारा प्रस्तुत किया गया। इलेक्ट्रीशियन कोर्स के छात्रों ने देशभक्ति गीत प्रस्तुत किया इस दिन खेलों का भी आयोजन किया गया था। छात्रों ने रजिस्टर–बैलेंसिंग रेस और स्लो–साइकिल रेस में भाग लिया। छात्राओं ने 'वॉकिंग रेस' में भाग लिया। बैट रेस के साथ बॉल बैलेंस भी कराया गया। सभी दर्शकों ने कार्यक्रम का लुत्फ उठाया।

संबंधित पाठ्यक्रमों के सभी कक्षाओं को छात्रों द्वारा तैय्यार किए गए टूल, उपकरण और चार्ट से सजाया गया था। 4 कमरों की सीरीज–समानांतर सर्किट, सीढ़ी की वायरिंग और पीवीसी केसिंग कैपिंग वायरिंग लकड़ी के बोर्ड और छात्रों द्वारा बनाए गए कई मॉडल प्रदर्शित किए गए, जिन्हें दर्शकों ने खूब सराहा।

वर्तमान सत्र के डी डी टी छात्रों ने खूबसूरती से सिले हुए वस्त्र, विभिन्न पेंटिंग और कढ़ाई के काम का प्रदर्शन किया। अंत में खेलों के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए और प्रकाश डाला गया सभी को जलपान कराया गया।

अटलांटा केंद्र

अटलांटा सेंटर के छात्रों ने 31 जनवरी, 2022 को हर्ष और उत्साह के साथ स्थापना दिवस मनाया। 34 ज़ूम कनेक्शन थे जिनमें से अटलांटा, डैलॅस, फ़्लॉरिडा और ह्यूस्टन के 25 से अधिक छात्र थे जिन्होंने उत्सव में भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत संस्कृत में विश्वविद्यालय प्रार्थना'हे दयाल सद कृपाल' से हुई, जिसे ह्यूस्टन के छात्रों ने मधुर स्वर में गाया।

तत्पश्चात्, श्रीमती मधुलिका नेमानी ने सभी का स्वागत किया और संस्थापक दिवस को परम गुरु डॉ० एम. बी. लाल साहब, डी.ई.आई. शिक्षा नीति के मुख्य शिलपकार के जन्म दिवस की तिथि पर मनाये जाने के महत्व के बारे में बताया। बाद में, डॉ०मीरा शर्मा, प्रोफेसर एमेरिटस, डी.ई.आई., ने 'गुरु महिमा' श्लोक और परम गुरु डॉ० लाल साहब पर संस्कृत में एक कविता का पाठ किया। उसके बाद, उन्होंने डी.ई.आई. के संस्थापक, पूज्य परम गुरु हुजूर डॉ०लाल साहब के लिए संस्कृत में 'जन्मदिन मुबारक' गीत गाया।

इसके बाद श्रीमती शबदा स्वरूप द्वारा 'परम गुरु डॉ० एम.बी. लाल साहब के प्रारंभिक जीवन, शिक्षा, महत्वपूर्ण घटनाओं और उनके शासन के दौरान दयालबाग का दौरा करने वाली प्रसिद्ध हस्तियों के बारे में बताया। बाद में श्रीमती हर्ष गुलाटी द्वारा परम गुरु डॉ० लाल साहब पर एक अंतर्दृष्टिपूर्ण संवाद सत्र आयोजित किया गया जिसमें अटलांटा अध्ययन केंद्र के बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। फ्लॉरिडा के बच्चों द्वारा एक 'परिवर्तन' कविता का प्रतिपादन किया गया जिसमें उन्होंने खाद और कृषि विज्ञान के प्रयासों की 'गो ग्रीन अटलांटा सेल' पहल पर जोर दिया।

इसके बाद, श्री हितेश गजाला और श्री पुनीत भटनागर द्वारा 'कम्पोस्टिंग पर एक वार्ता थी । अपने भाषण में, उन्होंने रसोई और यार्ड के कचरे को जैविक उर्वरकों में कुशलतापूर्वक परिवर्तित करने के लिए व्यावहारिक रूप से खाद बनाने की अंतर्दृष्टि और खाद बनाने की प्रक्रिया को साझा किया। नतीजतन, छात्रों को डी.ई. आई. दयालबाग एग्रोइकोलॉजी सिद्धांत का अनुकरण करने और उसे अपनाने के लिए वर्ष 2022 के लिए अपने व्यक्तिगत और स्थान हरित लक्ष्यों को स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। कार्यक्रम का समापन उनके पवित्र चरण 'अभिलाषा अयमेव यवत जीवम' में प्रार्थना के साथ हुआ, जिसे फ्लोरिडा के छात्रों द्वारा मधुर रूप से गाया गया था।

tky/kj dæ

Founder's Day Celebration at DEI Study Center, Jalandhar

जालंधर केंद्र में स्थापना दिवस सर्वाधिक उत्साह और जोश के साथ मनाया गया। माता–पिता और मैंटर्स के साथ उत्तीर्ण छात्र और नए प्रवेशकर्ता 2021–2022 सम्मानित समारोह में सादर आमंत्रित थे। श्री जसबीर सिंह, जिला सचिव, प्रमुख अतिथि थे एवं श्री अभिषेक कालरा, शाखा सचिव, विशिष्ट अतिथि थे। अतिथियों का स्वागत केंद्र प्रभारी श्री बलबीर सिंह, मार्गदर्शक

श्री जी.डी. खन्ना, श्री अशोक कालरा एवं श्रीमती सुनीता शर्मा ने वर्णन किया। विश्वविद्यालय प्रार्थना ने इस अवसर की शुरूआत को बहुत प्रभावशाली बना दिया। इसके बाद केंद्र प्रभारी द्वारा स्वागत अभिभाषण दिया गया और फिर श्रीमती उमा शर्मा द्वारा परम गुरु डॉ० एम.बी. लाल साहब के संक्षिप्त जीवन रेखाचित्र की प्रस्तुति हुई। इसके उपरान्त श्रीमती आशारानी ने एक शब्द 'हे संतन सिरताज कृपाला.....' की प्रस्तुति की, सुश्री भारती शर्मा ने शिक्षा पर विचार प्रस्तुत किए।

श्री शशि गुप्ता, ने डी.ई.आई. के मूल मूल्यों पर चर्चा की, और श्री अभिषेक कालरा ने नवागंतुकों को बधाई और शुभकामनाएं देकर प्रोत्साहित किया। मुख्य अतिथि द्वारा विद्यार्थियों को प्रमाण–पत्र भी प्रदान किए गए और फिर मेहमानों ने आयोजित प्रदर्शनियों का एक चक्कर लगाया।

n;ky uxj] fo'kk[kkiÙkue

डी.ई.आई. सूचना केंद्र दयाल नगर, विशाखापत्तनम में स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। श्री विजय प्रकाश मल्होत्रा, प्राचार्य, डी.ई.आई. टेक्नीकल कॉलेज, दयालबाग कोमाननीय मुख्य अतिथि के रूप में वर्चुअल मोड में पाकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय प्रार्थना से हुई। केंद्र प्रभारी श्री वी. दक्षिणामूर्ति द्वारापरिचयात्मक टिप्पणी दी गईं। मुख्य अतिथि का परिचय प्रशासनिक सूत्रधार श्री पी. रवि ने दिया। इसके बाद श्री मल्होत्रा ने प्रेरक भाषण दिया। स्थापना दिवस के महत्व के बारे में बताया और संस्थापक श्रद्धेय परम गुरु डॉ० एम.बी. लाल साहब के जीवन के इतिहास के बारे में भी विस्तार से बताया।

श्रीमती जी फणीश्री द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

iq.ks dsæ

पुणे में COVID प्रतिबंधों के कारण, इस वर्ष संस्थापक दिवस वर्चुअल मोड में मनाया गया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती विधि निगम ने किया। कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय प्रार्थना से हुई और इसके बाद सुश्री मंशा सिन्हा द्वारा स्थापना दिवस के महत्व पर एक अद्भुत प्रस्तुति दी गई। इसके बाद, डी.ई.आई. की एक पूर्व छात्र सुश्री सीमा दास द्वारा धर्मशास्त्र के महत्व पर एक प्रस्तुति दी गई। दो पूर्व छात्र, जिन्होंने एम बी ए पुणे केंद्र से किया था, ने अपने व्यावसायिक विचार प्रस्तुत किए किउन्हें एक नया व्यवसाय शुरू करने के लिए कैसे एम बी ए पाठ्यक्रम ने मदद की है। फिर, पुणे के केंद्र प्रभारी सुश्री विनीता भवनानी ने वर्तमान महामारी के दौरान अध्ययन के लिए आभासी प्लेटफार्मों की भूमिका पर एक खुली चर्चा की। छात्रों, मेंटर्स और अन्य उपस्थित लोगों ने कुछ बिंदुओं के साथ इस विषय के पक्ष पर अपने विचार साझा किए और "वर्चुअल एजुकेशन" के दौरान आने वाली कठिनाइयों को उजागर करने वाले कुछ बिंदु प्रस्तुत किए। जिला सचिव, श्री स्वामी दास ने भी इस विषय पर अपने बहुमूल्य सुझाव साझा किए। एम जी आर एस ए के क्षेत्रीय अध्यक्ष श्री पी.एस. मल्होत्रा ने एक भाषण दिया जिसने छात्रों को प्रेरित किया। एम बी ए मेंटर, श्री गुरुचरण अय्यर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। सभी ने सेलिब्रेशन का आनन्दमय लाभ उठाया।

संरक्षक • प्रो. पी.के कालरा
प्रो. वी.बी. गुप्ता

संपादकीय सलाहकार • प्रो. एस. के चौहान
प्रो. जे.के. वर्मा

संपादक मंडल (अंग्रेजी अंक) • डॉ. सोनल सिंह
डॉ. मीना पायदा
डॉ. लॉलीन मल्होत्रा
श्री. राकेश मेहता

अनुवादक डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

चित्रण, मुद्रण एवं ई–प्रकाशन : • दयालबाग प्रेस